शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३ : नई दिल्ली : २२-२८ अप्रेल २०१२

;xièkku vkpk;Jh egkiK dh f}rh; okf"kdh ij
ijeiT; vkpk;Jh egkJe.k }kjk lePpkfjr xhr

'kklu jk ljrkt l;kjk x#oj Egkjk thA
rjkiFk vfèkjkt nlok xf.koj Egkjk thA
Egkjk x#oj l;kjk xf.koj Fkku lejk vkt Ï
l;kjk x#oj Egkjk th Ï

^;k=kk rk vc egkJe.k jh Egkjk rk lg;kxA*
Jhe[k L; Qjekrk iHkoj oRlyrk l;kx ÏfÏ

tukxe & lEiknu 'kkHku xfjeke; vk;klA
ftuok³e; jh vkc c<kb vfHkuo pj.kU;kl Ï„Ï

è;ku i.kkyh [kkth fujkyh i{kkè;ku egkuA
;kx txr e efgek ikb {kedj vonku Ï…Ï

ij ljnkj'kgj e foHkoj dkyèkje u ikIrA
fdjik jk[khT;k Egk lc ij djT;k fo?ku lekIr Ï†Ï

egkiK 'kkLrk jk ik;k Hk{ko 'kklu Lgk>A
J)kur x#pj.kk ekg ^egkJe.k* x.kjkt Ï‡Ï

y; % rjkiFk vfèkjkt fHk{kLokeh-----A
ekMA

ije J); vkpk;ioj tlky dh vkj

mnkjrk l fuey dj dyg dk

‹ viyA वीर दुर्गादास नगर स्थित श्री भेरूलाल संकलेचा के घर से विहार कर आचार्यवर ने ग्रीनपार्क, आदर्शनगर और हाउसिंग बोर्ड होते हुए सेवा समिति द्वारा संचालित वृद्धाश्रम में पधारे। समिति के मंत्री श्री विजयराज बम्ब ने आश्रम के विषय में पूज्यवर को अवगति दी।

पूज्य आचार्यवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा--'वृद्धावस्था में व्यक्ति के मन में चित्त समाधि रहनी चाहिए। तनाव और चिंता का भाव मन में न रहे। यहां रहनेवाले वृद्ध अपना अधिकाधिक समय धर्माराधना में लगाएं।' पूज्यप्रवर ने आश्रम में वृद्धों को दर्शन भी दिए। आचार्यवर मानव सेवा संस्थान द्वारा अम्बेडकर भवन में संचालित तथागत प्राथमिक विद्यापीठ में भी पधारे तथा वहां पढ़ रहे अनाथ व कचरा बीनने वाले बच्चों को संबोध प्रदान किया।

आज का विहार मूलतः आठ किमी. का था। किन्तु पाली के उपनगरों में पधारने के कारण विहार लगभग ग्यारह किमी. का हो गया। घुमटी गांव से पूर्व कोठारी फार्म हाउस पधारने पर संपूर्ण कोठारी परिवार ने गुरुदेव का भावभीना स्वागत किया। कार्यक्रम में श्री श्रवणकुमार कोठारी ने अपने विचार रखे।

पाली के कलेक्टर श्री नीरज के.पवन ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज पूरे विश्व को अहिंसा की जरूरत है। पाली जिले में जिस तरह अहिंसा यात्रा चली, यहां की जनता पर आपकी शिक्षाओं का जो प्रभाव पड़ा, वह लंबे समय तक स्मृति में रहेगा। मैं पूज्य आचार्यश्री का आभारी हूं और यह अनुरोध करता हूं कि पाली को अपना चतुर्मास प्रदान करें, जिससे एक महीने से अधिक के प्रवास में यहां जो कार्य हुआ, उसे स्थायित्व मिले।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'संतों का पथ साधना का पथ होता है। उनका एकमात्र लक्ष्य रहता है कि उनकी सारी क्रियाएं साधना का माध्यम बनें और अनासक्त चेतना का विकास हो।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कलह पाप की चर्चा करते हुए कहा--'जैन वाङ्मय में कलह वर्जन का वर्णन आता है। अकेले व्यक्ति में कलह की संभावना नहीं रहती। अनेक का संयोग होने से कलह उत्पन्न हो सकता है। 'नमि तो एकाकी भलो दोय मिल्यां दुःख होय।' यह एक यथार्थ तथ्य है। उपशान्त कलह की उदीरणा न करें। उसे पुनः उभारना अवांछनीय है। अहंकार की स्थिति में संघर्ष व आवेश प्रविष्ट होता है। शादी के पचास-साठ वर्ष बाद भी आपसी कलह न हो तो मैं उसे दाम्पत्य जीवन की एक बड़ी साधना मानता हूं। परिवार में कहीं-कहीं झगड़े की स्थिति बन जाती है। परिवार संयुक्त हो या एकाकी हो, उसमें शान्ति व सौहार्द रहे।' आचार्यवर ने आगे कहा--'झगड़ों को निपटाने का स्थल है न्यायालय। वहां फैसले होते रहते हैं। लेकिन न्यायालय में जाने का काम न पड़े तो अधिक उपयुक्त है। सामंजस्यपूर्ण वातावरण में उसका समाधान खोजें। कलह को यदि निर्मूल करना है तो उदारता के भाव को विकसित करें। प्रेम व मैत्रीपूर्ण व्यवहार करें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पाली के सांसद श्री बद्रीराम जाखड़, पूर्व सांसद श्री पुष्प जैन, कलेक्टर श्री नीरज के.पवन एवं कई पुलिस अधिकारियों ने आज आचार्यवर के दर्शन किए और विभिन्न समसामयिक विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

feF;kHk;kx l cp

***f,* viyA** प्रातः मूर्तिपूजक अचलगच्छ के मुनि कलाप्रभजी के शिष्य मुनि कमलप्रभजी आचार्यवर से मिले और उन्होंने अपने उपाश्रय में पधारने का निवेदन किया। प्रातः विहार कर आचार्यवर जोधपुर रोड पर एक किमी. भीतर श्री गौतम गुण विहार विरति धाम पधारे। वहां मुनि कमलप्रभजी के सहवर्ती

साधु-साध्वियों ने पूज्यवर का स्वागत किया। १००वीं ओली की तपस्या कर रहे मुनि नंदीवर्धनजी ने भी आचार्यवर से भेंट की। आचार्यवर से उनका संक्षिप्त वार्तालाप हुआ। मार्ग में राजकीय प्राथमिक विद्यालय भाटों की ढाणी के विद्यार्थियों को आचार्यवर ने प्रेरणा प्रदान की। अतिरिक्त विहार के साथ लगभग तेरह किमी. का विहार कर आचार्यवर केरला पधारे। वहां आपका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का विशेष वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने तेरहवें पाप अभ्याख्यान पर मंगल प्रवचन करते हुए कहा--'मिथ्याभियोग लगाना अभ्याख्यान है। यदि किसी से गलती हो जाए, दोष लग जाए तो उसकी गलती को द्वेष भाव से प्रचारित-प्रसारित नहीं करना चाहिए। भूल न करने के बावजूद भी किसी निर्दोष पर दोषारोपण करना, झूठा केस करना बड़ा पाप है। सज्जन व्यक्ति किसी के दोष का पता लग जाए तो भी उसे बदनाम करने की कोशिश नहीं करता। दुर्जन के पास जो विद्या होती है, वह विवाद का हेतु बन सकती है, जबकि सज्जन की विद्या कल्याण हेतुक होती है। दुर्जन का धन अहं की वृद्धि व ऐशो आराम का कारक बनता है या कंजूसी में व्यर्थ जाता है। वह दान भी नहीं करता। सज्जन के पास धन होने से अहं हो भी सकता है, किन्तु वह अर्थ सहयोग भी करता है। लेकिन यह कार्य लौकिक व्यवहार है। दुर्जनता का एक लक्षण है मिथ्याभियोग लगाना। किसी को बदनाम नहीं करना चाहिए। इस वृत्ति के कारण भगवत्ता प्राप्त नहीं हो सकती। भीतर के परमात्मा को जगाना है तो अभ्याख्यान पाप को छोड़ना होगा।'

ikik l nj jg

ff viyA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः केरला से जेतपुरा के लिए विहार किया। मार्गवर्ती चाटेलाव गांव के भीतर भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। यहां एक स्थानकवासी जैन घर खुला रहता है। आचार्यवर ने कुछ क्षण आसीन होकर सभी लोगों को पावन पाथेय प्रदान किया और परिवार को उपासना कराई। इसके बाद आचार्यप्रवर गड़वाड़ा नामक गांव में पधारे। सैकड़ों ग्रामीणों ने पूज्यवर की भावभीनी अगवानी की। यहां का एकमात्र तेरापंथी परिवार अपने आराध्य के पदार्पण से उल्लसित था। पूज्यप्रवर गांव के भीतर कुछ क्षण विराजमान होकर ग्रामीणों को पावन संबोध प्रदान करते हुए 'सजग बनो बीती जा रही घड़ी' गीत का आंशिक संगान किया। १४.०५ किमी. का विहार कर आचार्यवर जेतपुरा पधारे। पूज्यप्रवर के पदार्पण से यहां के जैन समाज में उल्लास का वातावरण रहा। आचार्यवर के इस एकदिवसीय प्रवास हेतु स्थानकवासी कवाड़ परिवार के नौ घर खुल गए। आचार्यवर का प्रवास मोहनलाल सायरचन्द कवाड़ राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय में चल रही वार्षिक परीक्षाओं के कारण कार्यक्रम कुछ बिलम्ब से प्रारंभ हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री गौतमचन्द कवाड़, श्री केवलचन्द कवाड़ और विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री विनोद दवे ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणास्पद वक्तव्य हुआ।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में अठारह पापों में चौदहवें पाप पैशुन्य की चर्चा करते हुए कहा--'पैशुन्य का अर्थ है परोक्ष में दूसरों की बुराई करना, चुगली करना। जो व्यक्ति अपना हित चाहता है, वह इस प्रकार के दुष्कृत्यों से दूर रहे। व्यक्ति आत्मचिंतन करे कि मुझमें कौन-कौन सी बुराइयां हैं। उसके पश्चात् उनका क्रमशः अल्पीकरण कर अपनी आत्मा को निर्मल बनाने का प्रयास करे। स्वयं को पवित्र कार्यों में नियोजित करे और पापात्मक प्रवृत्तियों से दूर रहे।'

रात्रि में स्थानीय जैन परिवारों को पूज्यवर ने निकट उपासना का अवसर प्रदान किया। इस दौरान लोगों ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

nljk dh ugh] viuh fuUnk dj

f„ viyA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर जेतपुरा से १२.०८ किमी. का विहार कर माण्डावास पधारे। आकाश में उमड़ रहे बादलों और शीतल हवा के कारण मौसम सुहावना बना हुआ था। मार्ग में कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की छात्राओं को आचार्यवर से मंगल प्रेरणा प्राप्त हुई। माण्डावास में आचार्यवर का प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री बाबूलाल वैष्णव ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अठारह पापों में पन्द्रहवां पाप है परपरिवाद अर्थात् दूसरों की निन्दा करना। व्यक्ति दूसरों के दोषों को देखने का प्रयास करता है। उसे चाहिए कि कभी-कभी वह अपनी ओर भी दृष्टिपात कर लिया करे। किसी को बदनाम करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। निन्दा में जो रुक्ष शब्द होते हैं, वे किसी के मन को मलिन बनाने वाले हो सकते हैं। दूसरों की अपेक्षा अपने अवगुणों की निन्दा करें। हमें जो वाणी मिली है, वह हमारे पुण्य का फल है। कटुवचन, निन्दा, झूठ, गाली आदि के द्वारा अपनी वाणी का दुरुपयोग न करें। व्यर्थ बातें करना और निन्दा करना समय का अपव्यय है। सत्य और मधुर वचनों के द्वारा वाणी को सार्थक बनाया जा सकता है। दुनिया में कितने ही व्यक्ति हैं, जो मूक हैं। ऐसे में हमें वचनशक्ति प्राप्त है, यह हमारे शुभ कर्मों का परिणाम है। हम अपनी वाणी का सुन्दर और समीचीन उपयोग करें।'

पूज्यप्रवर ने साधक के लिए समत्व की प्रेरणा देते हुए कहा--'साधक को समता की साधना करनी चाहिए। वह निन्दा और प्रशंसा दोनों में सम रहने का प्रयास करे। कटुवचन और गाली आदि को सहना साधना होती है। गाली, निन्दा, कटुवचन आदि को व्यक्ति स्वीकार ही न करे। जो विरोध को विनोद मानकर चलता है, वह काफी शान्त रह सकता है।'

आज रात्रि में तेज आंधी के साथ हल्की बौछारें पड़ीं, जिससे मौसम में शीतलता व्याप गई।

f… viyA परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः माण्डावास से गैलावास की ओर विहार किया। मार्गवर्ती खुटाणी गांव के ग्रामीणों को आचार्यवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक व्यक्तियों ने नशामुक्त बनने का संकल्प ग्रहण किया। मेघाच्छन्न आकाश और ठंडी हवा के कारण मौसम सुहावना बना हुआ था। मौसम की अनुकूलता के कारण प्रलंब विहार भी सुखप्रद रहा। पूज्यप्रवर १४.०५ किमी. का विहार कर गैलावास पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में रहा। विद्यालय में चल रही वार्षिक परीक्षाओं के कारण आज प्रातःकालीन कार्यक्रम नहीं रखा गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में ग्रामीणों की अच्छी उपस्थिति रही। ग्रामवासियों को पूज्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई।

ckMej ftys e exy io'k

f† viyA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः पाली जिले के गेलावास गांव से प्रस्थान किया। लगभग पांच किमी. चलने के उपरान्त बखागांव के निकट पाली जिले की सीमा समाप्त हुई और पूज्यवर ने जालोर जिले में प्रवेश किया। इस जिले में लगभग डेढ़ किमी. ही चले थे कि जालोर जिले की सीमा संपन्न हो गई और बाडमेर जिले की सीमा प्रारंभ हो गई। इस अवसर पर पूज्यप्रवर ने एक स्वरचित पद्य फरमाया--

dN feuVk e gh fd;k] rhu ftyk dk Li'kA
ckMej e vc dj] èke ilkj lg"k Ï

ज्ञातव्य है कि पदाभिषेक के पश्चात आचार्यवर ने ग्यारहवें जिले के रूप में बाडमेर जिले का स्पर्श किया है। इससे पूर्व चूरू, बीकानेर, नागोर, अजमेर, भीलवाड़ा, राजसमन्द, उदयपुर, चित्तौड़, पाली और

जालोर जिले पूज्यवर की पदरज से पावन बने हैं।

आचार्यवर के पदार्पण से बाड़मेर जिले के श्रद्धालुओं में हर्षोल्लास का वातावरण था। सैकड़ों श्रद्धालु इस अवसर पर अपने आराध्य का स्वागत करने हेतु सीमा पर पहुंचे। उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर उनका आन्तरिक श्रद्धा-ज्वार मुखरित हो रहा था। पूज्यप्रवर ने यहां कुछ क्षण रुक कर श्रद्धालुओं के आन्तरिक श्रद्धा भावों को स्वीकार किया।

पूज्यप्रवर १३.०१ किमी. का विहार कर मजल गांव पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से यहां का जैन समाज अतिशय आह्लादित था। बारह स्थानकवासी परिवारों ने इस एकदिवसीय प्रवास हेतु अपने घर खोलकर पूज्यवर की उपासना का लाभ लिया। आचार्यवर का प्रवास जैन स्थानक में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री पारसमल सालेचा, श्री रमेश सालेचा, श्री खींवराज सालेचा आदि ने अपने गांव में पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपने आस्थासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। साध्वी कार्तिकयशाजी ने सिवाना पदार्पण पर आचार्यवर का अभिनंदन किया। मुमुक्षु वीणा (कनाना) ने अपनी ननिहाल भूमि पर पूज्यचरण का स्वागत करते हुए अपनी दीक्षा हेतु प्रार्थना की। आचार्यवर ने मुमुक्षु वीणा को पचपदरा में आषाढ़ शुक्ला द्वितीया तदनुसार २१ जून २०१२ को साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की तथा मुमुक्षु जय (वाव) व मुमुक्षु प्रतीक (भीलवाड़ा) को साधु प्रतिक्रमण सीखने का आदेश प्रदान किया।

धूरी चतुर्मास संपन्न कर मुनि विमलकुमारजी आदि संत तथा मुनि रवीन्द्रकुमारजी के सहवर्ती मुनि पृथ्वीराजजी आज मार्ग में पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचे। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि विमलकुमारजी, मुनि मधुरकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी और मुनि धन्यकुमारजी ने गुरुदर्शन से प्राप्त अपनी आन्तरिक प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरणादायी अभिभाषण में कहा--'आज आचार्यप्रवर ने अपनी अहिंसा यात्रा के अन्तर्गत बाडमेर जिले में प्रवेश किया है। बाडमेर सीमावर्ती जिला है। इस जिले के लोग बहुत परिश्रमी हैं। यहां आचार्यवर का लम्बा प्रवास है। अपेक्षा है यहां के लोग आचार्यवर के इस प्रवास का पूरा लाभ उठाएं। गांव-गांव में नशामुक्ति और अणुव्रत का प्रचार-प्रसार हो। श्रावक समाज तत्त्वज्ञान में आगे बढ़े। बारहव्रतों को स्वीकार करने का प्रयास करें तथा अपने लाडलों को श्रीचरणों में समर्पित करें तो आचार्यवर की यह यात्रा अधिक फलदायी सिद्ध होगी और आप लोग आचार्यवर के सपनों को साकार बनाने में अधिक योगभूत बन सकेंगे।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में सोलहवें पाप रति-अरति का विवेचन करते हुए कहा--'रति-अरति दो शब्दों के योग से बना शब्द है। रति का अर्थ है अनुराग और अरति का अर्थ है अरुचि। असंयम में रुचि और संयम में अरुचि रति-अरति पाप है। यदि संयम के प्रति आकर्षण और असंयम के प्रति अनाकर्षण का भाव उत्पन्न हो जाता है तो वह धर्म है। जितना-जितना संयम होता है, उतनी-उतनी धर्म की पुष्टि होती है और जितना असंयम होता है, अधर्म उतना ही वृद्धि को प्राप्त होता है। जैन-अजैन, नास्तिक-आस्तिक सबके लिए संयम कल्याणकारी है। वर्तमान जीवन की दृष्टि से नास्तिक के लिए भी अणुव्रत उपयोगी, सुखद, शान्तिप्रद और आनंदप्रद है।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'सबके लिए साधु बनना संभव नहीं होता। किन्तु गृहस्थ कुछ अंशों में तो संयम स्वीकार कर ही सकता है। बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ सकता है। धर्म का थोड़ा-सा अंश भी व्यक्ति को महान भय से उबारने वाला होता है। हिंसा, झूठ आदि के अल्पीकरण के द्वारा असंयम से संयम की ओर गति की जा सकती है। यदि व्यक्ति भोग से योग की ओर, राग से विराग की ओर, मनोरंजन से आत्मरंजन की ओर तथा अज्ञान से ज्ञान की ओर जाने का प्रयास करता है तो वह आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त बना लेता है।'

समागत मुनिवृन्द के विषय में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'मुनिश्री विमलकुमारजी स्वामी पंजाब से यहां

पधार गए। ये अच्छे और विद्वान संत हैं। प्राकृत और संस्कृत के वेत्ता मुनिप्रवर हैं। एक रचे-पचे संत प्रतीत होते हैं। पहले गुरुकुलवास में थे, बाद में गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने बहिर्विहार में भेज दिया। इनके सहवर्ती मुनि मधुरकुमारजी पहले हमारी सेवा में रहा करते थे। मुनि धन्यकुमारजी बीदासर के हैं। इन्होंने वक्तव्य का विकास किया है। मुनि पृथ्वीराजजी सिवांची-मालाणी क्षेत्र के हैं। दीक्षा के कुछ समय बाद ही इन्हें मुनिश्री रवीन्द्रकुमारजी स्वामी के साथ भेजा गया था। प्रौढ़ संत हैं। इनकी संसारपक्षीया पुत्री साध्वी तरुणयशाजी भी धर्मसंघ में साधना कर रही है। सभी संत अच्छी साधना और अच्छा कार्य करते रहें।' पूज्यप्रवर ने साध्वी कार्तिकयशाजी को भी अच्छी साधना, सेवा और खूब विकास करने की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यवर के मंगल प्रवचन के पश्चात् सुश्री मेघा बुरड़ ने अपने भावों को अभिव्यक्ति देते हुए जोधपुर और बायतू में शीघ्रातिशीघ्र पधारने की प्रार्थना की। मध्याह्न में स्थानीय जैन परिवारों को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

cMliu g Hky dk Lohdj.k

f‡ viyA प्रातः लगभग १४ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर करमावास पधारे। यहां आपका प्रवास भुतानी जैन भवन में हुआ। भुतानी जैन परिवार के भूखंड पर आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय मूर्तिपूजक श्रावक श्री हनुमानमल जैन, श्री धनराज छाजेड़ (समदड़ी) ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। समदड़ी महिला मंडल की बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। मुनि महावीरकुमारजी के द्वारा गीत प्रस्तुति के बाद मुनि उदितकुमारजी का वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में माया-मृषा पाप की व्याख्या करते हुए कहा--'माया और मृषा वैसे तो अठारह पापों में अलग-अलग पाप के रूप में वर्णित हैं। सत्रहवां पाप इनका संयुक्त रूप है। मायायुक्त झूठ बोलना माया मृषा है। माया का विलोम शब्द है--ऋजुता। धर्म के क्षेत्र में और अध्यात्म की साधना में ऋजुता का बहुत महत्त्व है। ऋजु व्यक्ति का पाप से बचाव हो सकता है। निर्वाण को वही व्यक्ति प्राप्त करता है, जिसके जीवन में धर्म का अवतरण है। धर्म उसी के जीवन में उतरता है, जिसका हृदय शुद्ध है। हृदय उसका विशुद्ध रहता है, जो ऋजुभूत होता है, जिसकी कथनी और करनी में विसंवाद नहीं होता। व्यवहार में माया और झूठ दोनों चलते हैं। होना तो यह चाहिए कि जीवन में सचाई के प्रयोग का अभ्यास करें। साधु के लिए यह आवश्यक है कि वह माया मृषा से उपरत होकर यथार्थ के पथ पर चले। गृहस्थों के लिए अपेक्षित है कि वे सरलता का अभ्यास करें। सरल व्यक्ति के प्रति सहज आकर्षण होता है। कुटिल के प्रति आकर्षण कैसे हो? वस्तुतः कपटयुक्त असत्य संभाषण बड़ा पाप है। भूल होने पर व्यक्ति उसे छिपाए नहीं। भूल का परिमार्जन व परिष्कार हो। भूल का स्वीकरण बड़प्पन है।'

आचार्यवर के पदार्पण पर करमावास के स्थानकवासी और मूर्तिपूजक संप्रदाय के अनेक घर खुले। सबमें अच्छा उत्साह था। आज रविवार होने से उपस्थिति अच्छी रही।

vkpk;Z egkiK egki;k.k fnol

१६ अप्रेल, बैशाख कृष्णा एकादशी। प्रातः लगभग पन्द्रह किमी. का विहार कर आचार्यवर मेली गांव पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ। आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस का कार्यक्रम विद्यालय में चल रही वार्षिक परीक्षा के कारण ग्यारह बजे प्रारंभ हुआ। पूज्यवर के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ प्रारंभ हुए कार्यक्रम में समणीवृन्द ने 'महाप्रज्ञ अष्टकम्' को प्रस्तुति दी। साध्वीवृन्द ने गीत प्रस्तुत किया। मुनि कोमलकुमारजी, मुनि धन्यकुमारजी एवं शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी ने गुरुदेव महाप्रज्ञजी को अपने भाव-सुमन अर्पित किए। सरपंच श्री बखताराम चौधरी ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। अणुव्रत समिति जसोल के मंत्री श्री सफरूखान ने अपने प्रासंगिक विचार रखे।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'आचार्य महाप्रज्ञजी ने ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम हेतु तीव्र प्रयत्न किए। इसके लिए उन्होंने गहन अध्ययन और अध्यापन किया, स्वाध्याय किया। ज्ञान के दो रूप हैं--वक्तृत्व व लेखन। आचार्य महाप्रज्ञ दोनों विधाओं में पारंगत थे। उनके दर्शनावरणीय कर्म के क्षयोपशम की साधना भी गजब की थी। अपने गुरु आचार्य तुलसी के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी। उनका यह विश्वास था कि गुरुदेवश्री का नाम लेकर खड़ा होऊंगा तो विजयश्री का वरण करूंगा। उनके मोहविलय की साधना भी प्रखर थी। उन्होंने अपनी शक्ति का संगोपन नहीं किया। वे योजनाबद्ध रूप से अपनी शक्ति का नियोजन करते थे।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'महापुरुष अपने पुरुषार्थ से ऐसे पृष्ठ निर्मित कर देते हैं, जिनसे वे इतिहास पुरुष बन जाते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ एक ऐसे महापुरुष थे, जो अपने प्रखर कर्तृत्व की बदौलत इतिहास पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनका ज्ञान का क्रम विराट और विस्तृत था। वे स्वयं श्रुतपुरुष बन गए। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके ज्ञान के द्वार खुल गए थे। उन्हें सभी विषयों का ज्ञान था। गुरुदेव तुलसी और महाप्रज्ञ के शासनकाल में तेरापंथ धर्मसंघ को ऊंचाई मिली, एक पहचान मिली। चूहे-बिल्ली के रूप में प्रसिद्ध तेरापंथ आज प्रगतिशील धर्मसंघ के रूप में उभरा है। तेरापंथ धर्मसंघ का यह सौभाग्य रहा कि उसे ऐसे महान श्रुतपुरुष का नेतृत्व मिला।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आचार्य महाप्रज्ञ एक विलक्षण संत थे। वे बहुश्रुत थे। उनकी ज्ञान चेतना विशुद्ध थी। इतिहास प्रसिद्ध जोड़ियों--सुकरात-अरस्तू, अरस्तू-प्लेटो, महावीर-गौतम, गौतम बुद्ध-आनन्द, रामकृष्ण परमहंस-विवेकानंद की भांति हमारे धर्मसंघ की भिक्षु-भारीमाल और तुलसी-महाप्रज्ञ की जोड़ी भी सुविख्यात बनी है। यह जोड़ी दुर्लभ थी। गुरुदेव तुलसी कहा करते थे कि दोनों का यह सुयोग बार-बार नहीं मिलने वाला है। अनेक लोगों ने यह अनुभव दिया कि दोनों महापुरुषों ने किस प्रकार अभिन्न जीवन जीया।'

तीन प्रकार के मस्तिष्क की चर्चा करते हुए महाश्रमणीजी ने कहा--'जिनके पास छोटा मस्तिष्क है, वह अपने आसपास के बारे में सोचता है। सामान्य मस्तिष्क वाले होने वाली घटना के प्रति चिंतन करते हैं। तीसरे महान मस्तिष्क वाले होते हैं, जो नये-नये विचार और चिंतन के क्षितिज उद्घाटित करते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ तीसरे मस्तिष्क वाले थे, जिन्होंने धर्मसंघ और संपूर्ण मानव जाति हेतु नये विचार दिए, जिनसे सभी उपकृत हुए। गुरुदेव तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के जो आगम संपादन आदि अधूरे कार्य हैं, वे सब आचार्य महाश्रमण के नेतृत्व में आगे बढ़ें और हम उसमें अपना योगदान करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'धर्म का अवबोध करने के लिए प्रज्ञा का विकास अपेक्षित है। जिसमें प्रज्ञा का अभाव है या जिसकी प्रज्ञा मंद है, वह तत्त्व का रहस्य कैसे समझेगा? आचार्य महाप्रज्ञ में प्रज्ञा का विकास था। उन्होंने तत्त्व या शास्त्रों के रहस्यों को केवल समझा ही नहीं, अपितु दूसरों को भी समझाने का प्रयास किया। उनमें ज्ञान का विशेष क्षयोपशम था। उनके जीवन का काफी समय विद्या की उपासना में बीता। आचार्य तुलसी का जीवन विद्याराधना के साथ जनाराधना में भी व्यतीत हुआ। गुरुदेव की प्रज्ञा विकसित थी, क्षयोपशम निर्मल था। वे तत्त्व निरूपण करते, अध्यापन करते, इतने बड़े धर्मसंघ का संचालन करते। लंबे समय तक धर्मसंघ के संचालन का कार्य प्रायः अकेले ही करते रहे।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आचार्य तुलसी के विद्यार्थियों में एक विद्यार्थी आचार्य महाप्रज्ञजी थे। वे बड़ी उम्र में बनने वाले युवाचार्य और आचार्य थे। दस आचार्यों में सर्वाधिक लम्बी आयु (९० वर्ष) उन्होंने प्राप्त की। उनमें ज्ञान का क्षयोपशम गजब का था। बचपन में संभवतः कम था, बाद में द्वार खुला तो ज्ञान प्रविष्ट होता ही गया। संस्कृत भाषा का उन्होंने अच्छा अध्ययन किया। इस भाषा में कितने ही भाषण दिए, ग्रंथ लिखे और आशु कविता की।'

आचार्य महाप्रज्ञ के जीवनगत वैशिष्ट्य की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'आचार्यश्री के जीवन में कितनी गंभीरता थी, कितना गहरा चिंतन था, कितना संयम था, कितनी वत्सलता और करुणा थी, कितना अच्छा व्यवहार था। उनका खाद्य संयम, वाणी संयम एवं साधना कितनी अनुत्तर थी। साहित्य जगत् को उनका कितना योगदान रहा है। भाषा पर उनकी कितनी गहरी पकड़ थी। भाषागत उच्चारण भी उनका कितना विशुद्ध था। उनके जीवन में आगम संपादन का विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य निष्पादित हुआ है। उनके चरणों में बैठकर मुझे विद्याराधना का अवसर प्राप्त हुआ, अध्ययन का क्रम चला। उन्होंने कितनों को विद्यादान दिया। उनका प्रवचन कितना प्रभावशाली था। आचार्य बनने के बाद वे प्रायः प्रतिदिन प्रातःकालीन प्रवचन करते। उनका प्रवचन जनभोग्य हुआ करता था। संस्कार चैनल के माध्यम से बड़ी संख्या में लोगों ने उस प्रवचन का लाभ लिया। उनकी अहिंसा यात्रा बहुत प्रभावशाली रही। इस यात्रा के निर्णय में मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी का भी परामर्श रहा।

गुरुदेव की अहिंसा यात्रा के विभिन्न प्रसंगों व महाप्रयाण के समय की स्थिति का आचार्यवर ने विशद विवेचन किया और कहा--'तेरापंथ का प्रायः यह सौभाग्य रहा है कि यहां एक सूर्य के बाद दूसरा सूर्य प्रत्यक्ष हो जाता है। गुरुदेव महाप्रज्ञजी का संघीय भविष्य के प्रति कितना गहरा चिंतन था। दोनों गुरुओं ने युगपत रूप में मुझे कार्यक्षेत्र में नियोजित किया, विधिवत घोषणा कर मुझे विशाल उपस्थिति में गुरुदेव महाप्रज्ञ ने संघीय दायित्व सौंपा। गुरुदेव तुलसी व गुरुदेव महाप्रज्ञ को अलग-अलग देखना कठिन है। दोनों महान गुरुओं का वियोग मैंने देखा और सहा है। जैन शासन, तेरापंथ धर्मसंघ और संपूर्ण मानव जाति के लिए उनका महनीय योगदान रहा है।'

महाप्रयाण दिवस के संदर्भ में आचार्यवर ने स्वरचित गीत का संगान किया और विश्लेषण किया। वह गीत इसी विज्ञप्ति के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित है।

आचार्यवर ने आगे कहा--'यह गांव साध्वी कर्णिकाश्री, साध्वी मैत्रीप्रभा से जुड़ी हुई भूमि है। दोनों साध्वियां अपना अच्छा विकास करें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। कार्यक्रम में आसपास के गांवों की अच्छी उपस्थिति थी। आज साधु-साध्वियों में बहुत उपवास हुए।

x< flokuk e egkeuk vkpk;oj dh vfHkonuk

f‰ viyA प्रातः लगभग ११ किमी. का विहार कर आचार्यवर चार बीघा क्षेत्र में विकसित व मूर्तिपूजक समाज द्वारा संचालित मोकलसर-सिरोही रोड स्थित चंपावाड़ी परिसर में पधारे। वहां आपका प्रवास यात्रिक भवन में हुआ। आज अवसर था सिवांची-मालाणी क्षेत्र की ओर से पूज्यवर की अभिवंदना का। इस संभाग के प्रायः सभी क्षेत्रों के लोग बड़ी संख्या में नगर प्रवेश पर ही पहुंच गए। एस.डी.ओ.श्री नरेन्द्रकुमार जैन, श्री शंकरलाल गर्ग (नायब तहसीलदार), श्रीमती अभिलाषा शुक्ला (विकास अधिकारी) एवं किसान नेता श्री हमीरसिंहजी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे। जैन परिसर में निर्मित प्रवचन पंडाल में आयोजित इस अभिवंदना समारोह में सिवांची-मालाणी महिला मंडल, कन्यामंडल अषाढ़ा, कन्यामंडल जसोल, टापरा ने आचार्यवर के स्वागत में गीत प्रस्तुत किए। अभिवंदना के क्रम में बालोतरा व्यवस्था समिति के संयोजक श्री देवराज खिंवेसरा, श्री डूंगरमल बागरेचा (पचपदरा), सिवांची-मालाणी प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री पृथ्वीराज जैन, जसोल चतुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतम सालेचा, नाकोड़ा ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री भूरचन्द जीरावला (सिवाना), प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री पृथ्वीराज बागरेचा (सिवाना), चंपावाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बंशराज सिंघवी, श्री मोहनलाल गोलेच्छा ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। समणी अक्षयप्रज्ञाजी की विचार प्रस्तुति के बाद इस क्षेत्र की यहां उपस्थित साध्वियों, समणियों व मुमुक्षु बहनों ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। मुमुक्षु बहनों ने गीत के माध्यम से साधु प्रतिक्रमण सीखने का आदेश फरमाने की भावपूर्ण प्रार्थना की। आचार्यवर ने महती कृपा कर इस क्षेत्र की मुमुक्षु बहनों को

साधु व तीन बहनों को समण प्रतिक्रमण सीखने का आदेश प्रदान किया। जनता ने 'ओम अर्हम' की ध्वनि के साथ अपना हर्ष प्रकट किया।

अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री गोपाराम मेघवाल ने कहा--'आज का आदमी भौतिकवाद से जकड़ा और मोह माया के जंजाल में फंसा हुआ है। ऐसे में आपके अहिंसा व शान्ति के उपदेश का यदि अनुसरण किया जाए, आपके आदर्शों का पालन किया जाए तो सर्वत्र अमन-चैन का वातावरण निर्मित हो सकता है।'

बाड़मेर जिला कलेक्टर डॉ. वीणा प्रधान ने अपने वक्तव्य में कहा--'तेरापंथ समाज ने मुझे इस कार्यक्रम में स्वागताध्यक्ष के रूप में बुलाया, इसकी मुझे प्रसन्नता है। मैं अपनी ओर से, बाड़मेर जिले की जनता और प्रशासन की ओर से आपका स्वागत करती हूं। मेरी क्या हस्ती जो आप जैसे पुण्यात्मा महापुरुष का स्वागत करूं? आप शान्तिदूत के रूप में अहिंसा यात्रा कर रहे हैं, परोपकार का कार्य कर रहे हैं। आपके मिशन की हर आदमी को सख्त जरूरत है। वैसे तो इस जिले में कमोबेश शान्ति है, पर इन दिनों कहीं-कहीं गड़बड़ सुनने में आ रही है। आपकी प्रेरणा से जन-जन में शान्ति का भाव जगेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।'

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने कहा--'भारतीय ग्रंथों में चिंतामणि रत्न, कामधेनु, कल्पवृक्ष आदि को दुर्लभ बताया गया है। मनुष्य जन्म व मुमुक्षाभाव को भी दुर्लभ माना गया है। अच्छा गुरु मिलना उससे भी ज्यादा दुर्लभ है। परमपूज्य आचार्यप्रवर शहर हो या गांव, जहां भी पधारते हैं, उमंग और उत्साह व्याप जाता है। आचार्यवर की शिक्षाओं को जीवन में उतारें और अपने जीवन को कृतार्थ करें।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा मानव मात्र को सद्भावना का संदेश है, नशामुक्ति का अभियान है। आचार्यश्री चाहते हैं कि हर व्यक्ति सुखपूर्वक जीवनयापन करे। सुख प्राप्ति के लिए संयम को अपनाना होगा। संयम के अभाव में सुख संभव नहीं है। आचार्यवर के बाड़मेर जिले के प्रवास में मैत्री की बाढ़ आएगी और यहां के लोग आपके शिक्षामृत का पान कर अपने जीवन को सुखमय बनाएंगे, ऐसा विश्वास है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज जनाकीर्ण प्रवचन पंडाल भगवान महावीर के समवसरण का दृश्य उपस्थित कर रहा है। आजका युग व्यस्तता का है। लोग कहीं आने-जाने का भी समय नहीं निकाल पाते, लेकिन मेवाड़-मारवाड़ में आचार्यवर के एक दिन नहीं, एक घंटे के प्रवास में भी कितने लोग कहां-कहां से पहुंच जाते। दोनों संभागों में धर्म-अध्यात्म की ऐसी लहर चली, जिससे धरती सरसब्ज बनी और लोगों का जीवन महका। सिवांची-मालाणी क्षेत्र के लोगों ने श्रद्धासिक्त अभिवंदना की है। विश्वास है आचार्यवर के प्रवास से जनता को नैतिकता का प्रकाश मिलेगा, मनुष्य में मनुष्यता अवतरित होगी, बशर्ते कि सभी अणुव्रत के मार्ग पर चलें।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्रत्येक व्यक्ति में मंगल प्राप्ति की भावना रहती है। वह चाहता है कि उसके जीवन में किसी भी प्रकार की विघ्न-बाधा न आए। जिसके जीवन में धर्म का अवतरण है, उसे मंगल प्राप्त हो सकता है। अहिंसा, संयम व तप--यह त्रिआयामी धर्म है। अहिंसा ऐसा तत्त्व है, जो शांति प्रदान करने व कल्याण का पथ प्रशस्त करने में सक्षम है। अहिंसा के लिए कहा गया--'सव्वभूयखेमंकरी।' अहिंसा सभी जीवों का क्षेम करने वाली है। हमारे कार्यकलापों में अहिंसा झलके। इन्द्रिय, मन और वाणी का संयम प्रशस्त बने। आत्मकल्याण के लिए तप का भी अपना महत्त्व है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से व्यक्ति के जीवन को संयमित बनाने का प्रयास किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के द्वारा जन जीवन में अहिंसा की स्थापना का प्रयास किया।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा घोषित मेवाड़ और मारवाड़ की अवशिष्ट अहिंसा यात्रा अस्वास्थ्य की स्थिति में नहीं हो सकी। मुझे आत्मतोष है कि उनके द्वारा घोषित सिवांची-मालाणी में आया हूं। मेवाड़ यात्रा संपन्न कर हमने मारवाड़ में प्रवेश किया और अब बाड़मेर जिले में हूं। यहां

हमारा लम्बा प्रवास है। इस प्रवास में अणुव्रत व अहिंसा का कार्य योजनाबद्ध ढंग से और सघनता से चले, जिससे शांति और सौहार्द में वृद्धि हो और अनुकंपा की चेतना का विकास हो।'

सिवांची-मालाणी क्षेत्र में अपने आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'इस क्षेत्र में मैं चौथी बार आया हूं। परिचित व ज्ञात क्षेत्र है। यात्रा में साध्वीप्रमुखाजी व मंत्री मुनिश्री का भी योग मिला है। इस क्षेत्र से जुड़े हुए साधु-साध्वियों, समणियों और मुमुक्षु बहनों की बड़ी संख्या है। यह इस क्षेत्र का बड़ा अवदान है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

रात्रि में भी प्रवचन व प्रेरणा-पाथेय का क्रम चला। सिवाणा में श्रद्धा के सात-आठ परिवार एवं अन्य जैन समाज के लगभग दो हजार परिवार हैं, जो मुख्यतः कर्नाटक व मुम्बई में प्रवासी हैं। आचार्यवर के पदार्पण से संपूर्ण जैन समाज में हर्षोल्लास का वातावरण रहा।'

Lefr&Icy

- श्रीडूंगरगढ़ निवासी वयोवृद्ध श्रावक रुकमानंदजी मालू का सौ वर्ष छह महीने की उम्र में देहावसान हो गया। उनके सुपुत्र श्री पूनमचन्द मालू का उनके एक दिन बाद निधन हो गया। उनके तृतीय पुत्र कमलसिंह मालू का अपने पिता और भाई से एक माह पूर्व स्वर्गवास हुआ था। लगभग एक माह की अवधि में परिवार के तीन सदस्यों का चले जाना मालू परिवार के लिए बहुत बड़ा आघात है। रुकमानन्दजी शान्त स्वभाव और सरल प्रकृति के व्यक्ति थे। उनके गुरुदर्शन और गोचरी की प्रबल भावना रहती थी। स्वर्गीया साध्वी किरणप्रभाजी उनकी संसारपक्षीया पुत्री थीं। वर्तमान में वृद्ध साध्वियों का सेवाकेन्द्र जिस मालू भवन में है, उसके निर्माण की प्रेरणा मुख्यतः रुकमानन्दजी की ही थी। रुकमानन्दजी को साध्वी रामकुमारीजी ने अनशन करवाया, जो लगभग चार घंटे आया। कहते हैं उस समय बाहर की चेतना लुप्तप्राय थी। उनके द्वितीय पुत्र शासनसेवी बनेचन्दजी मालू जय तुलसी फाउंडेशन के वर्षों तक प्रबंध न्यासी रहे। आज भी समाज को उनकी सक्रिय सेवाएं प्राप्त हैं। रुकमानन्दजी के दिवंगत पुत्र पूनमचन्दजी संघ समर्पित, सेवाभावी और समाज के जिम्मेदार कार्यकर्ता थे। अपने पिता रुकमानन्दजी की अन्त्येष्टि की तैयारी में संलग्न पूनमचन्दजी को हृदयाघात हुआ और अस्पताल ले जाते हुए मार्ग में उन्होंने अंतिम सांस ले ली। इस प्रकार पिता-पुत्र दोनों की अर्थी एक साथ उठी। इसे नियति का योग ही कहा जा सकता है। उनके कनिष्ठ पुत्र श्री कमलसिंह भी सहज धार्मिक और मिलनसार स्वभाव के थे।
- चाड़वास निवासी श्री माणकचन्दजी सेठिया का तिरानबे वर्ष की अवस्था में बारह दिन के चौविहार तप में स्वर्गवास हो गया। दो सामायिक सहित जप, स्वाध्याय, संतदर्शन आदि उनका नित्यक्रम था। प्रतिवर्ष केन्द्र की प्रायः दो बार उपासना किया करते थे। चाड़वास में विराजमान साधु-साध्वियों की सेवा-उपासना में सदैव तत्पर रहते थे। माणकचन्दजी की संसारपक्षीया सुपुत्री साध्वी विवेकश्रीजी लम्बे समय से गुरुकुलवास में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी की सेवा में संलग्न हैं।
- देवगढ़ निवासी पंचानबे वर्षीया श्रीमती कंकुदेवी दक (धर्मपत्नी-स्व.मांगीलालजी दक) का लगभग इक्कीस घंटे के तिविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। आचार्यप्रवर के निर्देश से उन्हें समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी व समणी विपुलप्रज्ञाजी का आध्यात्मिक सहयोग प्राप्त हुआ।
- वाव निवासी बड़ोदरा प्रवासी श्रद्धानिष्ठ श्रावक जयंतीभाई मेहता का स्वर्गवास हो गया। साध्वी निर्भयप्रभाजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी उनकी संसारपक्षीया सुपुत्री एवं साध्वी मधुरेखाजी उनकी संसारपक्षीया बहन हैं। साध्वी लाभवतीजी एवं साध्वी शशिरेखाजी भी उनके परिवार से संबद्ध हैं। पांच सामायिक, सायं प्रतिक्रमण, जप, ध्यान, स्वाध्याय आदि उनकी दिनचर्या के अंग थे। बारहव्रतधारी जयंतीभाई के साठ वर्ष से जमीकन्द व बीस वर्ष से व्यापार आदि का परित्याग था। पिछले पैंतीस वर्षों से

वे प्रतिवर्ष केन्द्र की लंबी उपासना किया करते थे। तेरह वर्ष तक वे बड़ोदरा सभा के अध्यक्ष और वाव पथक के भी अध्यक्ष रहे। बड़ोदरा और पालनपुर के तेरापंथ भवन के निर्माण में उनकी मुख्य भूमिका रही। आचार्य तुलसी के शब्दों में जयंतीभाई शासनभक्त, विश्वासी, विवेकसंपन्न और प्रबुद्ध श्रावक थे।

- श्रीडूंगरगढ़ निवासी श्री तोलारामजी बोथरा का नब्बे वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। ओसवाल पंचायत भवन व तेरापंथी सभा के अध्यक्ष रहे श्री बोथराजी प्रारंभ से ही स्वाध्यायप्रेमी रहे। प्रायः प्रतिदिन पांच सामायिक व तप के साथ साधु-साध्वियों की मार्गवर्ती सेवा बड़ी रुचि से किया करते थे। साठ वर्ष की उम्र में उन्होंने स्वयं को व्यापारिक कार्यों से मुक्त कर लिया था। साधु-साध्वियों की चिकित्सा व्यवस्था तथा गोचरी की भावना मनोयोग से करते थे। तेरापंथ इतिहास मनीषी मुनि नवरत्नमलजी उनके संसारपक्षीय न्यातीले थे। उनके सुपुत्र दीपचन्द बोथरा स्थानीय सभा के अध्यक्ष हैं।
- इन्दोर निवासी श्री जेठमलजी कोठारी का नब्बे वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। कामठी-नागपुर में जन्मे कोठारीजी को धर्मनिष्ठा और समाज सेवा के संस्कार अपने पिता हीरालालजी कोठारी से विरासत में प्राप्त हुए। उच्च शिक्षा प्राप्त श्री जेठमलजी भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के अंतर्गत अल्पबचत विभाग के उपायुक्त पद पर रहे। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित कोठारीजी ने सेवानिवृत्ति के बाद अपना समय प्रायः धर्मसंघ की सेवा में लगाया। वे प्रेक्षाध्यान के साधक थे और प्रतिवर्ष अपनी धर्मपत्नी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती शान्तादेवी के साथ लंबे समय तक केन्द्र की उपासना करते थे। आचार्यों के कृपापात्र थे। उनके तीनों पुत्र और दो पुत्रियां भी संस्कारी और शासनभक्त हैं। उनके सुपुत्र रमेशजी साहित्य प्रसार व अन्य संघीय उपक्रमों से सक्रियता से जुड़े हुए हैं।

vHkkr;i }kjk ^vodfux ;Fk „,f„* dk l?kiHkkod vk;ktu

४ अप्रेल २०१२ को महावीर जयंती की पूर्व संन्ध्या पर अ.भा.तेयुप द्वारा मुम्बई में 'अवेकनिंग यूथ २०१२' का संघप्रभावक कार्यक्रम आयोजित हुआ। नशामुक्ति एवं संस्कार निर्माण के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में फिल्म अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा, निशा कोठारी, स्थानीय सांसद प्रिया दत्त, मुम्बई के महापौर सुनील प्रभु, उपमहापौर मोहन निठवालकर, पुलिस महानिदेशक सुरेन्द्रकुमार आदि व्यक्तियों की विशेष उपस्थिति रही। प्राप्त जानकारी के अनुसार तीस हजार की उपस्थिति में समायोजित इस कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण के व्यक्तित्व पर आधारित डाक्यूमेंट्री तथा आचार्यवर के संदेश प्रसारण के साथ श्रद्धानिष्ठ संगायक कमल सेठिया, राजा हसन, मुम्बई ज्ञानशाला, तेरापंथ किशोरमंडल एवं कन्यामंडल की प्रस्तुतियां हुईं। आयोजन के प्रचार-प्रसार में आधुनिक माध्यमों का प्रयोग किया गया। अभातेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ ने बताया--इस संघप्रभावक समायोजन में उपाध्यक्ष श्री बी.सी.भलावत, कार्यक्रम संयोजक श्री मेघराज धाकड़, अभातेयुप टीम मुम्बई के सदस्यगण, स्थानीय शाखा परिषदों, तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल आदि का निष्ठापूर्ण श्रम रहा।

ff ee{kvk dk ifrØe.k dk vkn'k

१७ अप्रेल को सिवांची-मालाणीस्तरीय स्वागत समारोह में परमपूज्य आचार्यप्रवर ने ११ मुमुक्षुओं को प्रतिक्रमण सीखने का आदेश प्रदान किया। उनके नाम इस प्रकार हैं--

lkèk ifrØe.k

१. मुमुक्षु भावना बी.(जसोल)
२. मुमुक्षु मोक्षा (जसोल)
३. मुमुक्षु पूजा (जसोल)
४. मुमुक्षु पूजा (अषाढ़ा)
५. मुमुक्षु भाग्यश्री (अषाढ़ा)
६. मुमुक्षु कविता (जसोल)
७. मुमुक्षु प्रांजल (बालोतरा)
८. मुमुक्षु ज्योति (पचपदरा)

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

le.k ifrØe.k

१. मुमुक्षु प्रीति (टापरा) २. मुमुक्षु भावना (जसोल) ३. मुमुक्षु प्रेक्षा (आसोतरा)

lkèoh jktorhth dk vu'kuiwod LoxokI

श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र में स्थित साध्वी राजवतीजी (श्रीडूंगरगढ़) का छह दिन की संलेखना सहित अनशन के ६२वें दिन स्वर्गवास हो गया। उनके संदर्भ में आचार्यवर के उद्‌गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

lkèoh y{ehorhth ¼ljnkj'kgj½ dk vu'ku io)Zeku

बीदासर समाधिकेन्द्र में स्थित साध्वी लक्ष्मीवतीजी (सर.) ने २८ मार्च २०१२ को तिविहार अनशन स्वीकार किया है। समाचार लिखे जाने तक उनका अनशन उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान है।

vkn'kZ lkfgR; la?k dk HkV

५१००/- चि. दीपक (सुपौत्र-स्व.पूनमचन्दजी मोहरदेवी डागा, श्रीडूंगरगढ़) सह सौ.नेहा (सुपुत्री-संतोष-इन्द्रा बांठिया, भीनासर) के शुभ विवाहोपलक्ष्य में प्रवीण, विनोद, विजय, अशोक डागा परिवार द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्रीमती इन्द्रादेवी कुंडलिया (साध्वी अमृतश्रीजी) की संथारे में पावन दीक्षा के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र माणकचन्द, संपतमल, हेमराज, नवरतन कुंडलिया, श्रीडूंगरगढ़-कोलकाता-गुलाबबाग-विराटनगर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. चेतन सिंघवी (सुपुत्र-श्री मदनलाल-चन्द्रादेवी सिंघवी, धानीन) की स्मृति में श्री नथमलजी-अणचीबाई, ललितकुमार-कैलाशदेवी, विनोदकुमार-बसंतादेवी सिंघवी, भायन्दर-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती तारादेवी धारीवाल (पुत्रवधू-श्री रतनलालजी, धर्मपत्नी-श्री पारसराज धारीवाल, छोटीखाटू-लुधियाना) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र उज्ज्वल, अजित धारीवाल द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. वरुणकुमार (सुपौत्र-श्रीमती प्रेमदेवी रोशनलाल काल्या, पीथास-भीलवाड़ा) के मुंडन संस्कार के उपलक्ष्य में श्रीमती शान्ता-रतनलाल, चाऊ-पुखराज, रोशनी-राजमल, मीना-बाबूलाल, लीला-सुरेशकुमार, राधिका-दिलीपकुमार काल्या द्वारा प्रदत्त।

२१००/- नूतन गृह-प्रवेश के उपलक्ष्य में श्री जैनसुख संपत नाहटा, सुपुत्र व पुत्रवधू विकास-मनीषा, पारस-श्वेता, सुपौत्री साक्षी, चार्वी, रैनी नाहटा, छापर (राज.) गाजियाबाद (उ.प्र.) द्वारा प्रदत्त।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर २२ अप्रेल को बालोतरा पधार गए हैं। बालोतरा, जसोल दोनों आपस में जुड़े हुए हैं। जोधपुर और पाली से प्रायः समान दूरी (१०० किमी.) पर हैं और सड़क व रेलमार्ग से जुड़े हुए हैं। इस संदर्भ में विशेष जानकारी के लिए प्रवास व्यवस्था समिति बालोतरा से संपर्क किया जा सकता है।

d'koiIkn proh] icU/kd&vkn'kZ lkfgR; la?k] }kjk&tu 'orkEcj rjkiFkh lHkk]
ik- ckykrjk&…†† ,„„] ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % 09680055381] 09352404641
fnYyh dk;kZy; dk Qku 011&23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % 21&4&2012

•

vkn'kZ lkfgR; la?k] 210] nhun;ky mikè;k; ekxZ] ub fnYyh&110002 d fy, cPNjkt dBkfr;k VLVh }kjk idkf'kr
rFkk iou fiVI] uohu 'kkgnjk] fnYyh&110032 l efnzrA lEikndd % **d'koiIkn prohA**